आचार्य महाश्रमण का अणुव्रत भवन में प्रवास

सरदारशहर 21 अक्टूबर, 2010।

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण का स्थानीय तेरापंथ भवन के पास में नवनिर्मित अणुव्रत भवन का अवलोकन करते हुए रात्रि प्रवास किया।

कार्यकर्त्ता अणुव्रत को आगे बढ़ाने का प्रयास करे

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 21 अक्टूबर, 2010।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित राष्ट्र स्तरीय अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों से सम्बन्धित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं एवं अहिंसा प्रशिक्षकों का राष्ट्रीय अधिवेशन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महारमण के सान्निध्य में प्रारंभ हुआ। इसमें 6 राज्यों के 72 छात्र-छात्राएं तथा 34 प्रशिक्षक उपस्थित हैं। इस अवसर पर विभिन्न केन्द्रों की एक भव्य प्रदर्शनी लगाई गयी, जिसका उद्घाटन चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी व आन्ध्रप्रदेश के विधायक जी नागेश्वर ने किया। इस अवसर पर वक्फ बॉर्ड आन्ध्रप्रदेश के पूर्व चेयरमेन भी उपस्थित थे।

आचार्य महाश्रमण ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा प्रज्ञा के विकास के लिए साधना की आवश्यकता होती है आज के दिन तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य का जन्म दिन है उन्होंने प्रज्ञा का विकास किया था, अणुव्रत कार्यकर्ता के लिए भी आवश्यक है कि वे अणुव्रत को आगे फैलाने का प्रयास करें। उन्होंने आज चतुर्दशी के दिन मर्यादा पत्र का वाचन किया।

चातर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी व स्थानी सभा के उपाध्यक्ष पीरदान ने आए हुए अतिथियों को प्रतिक चिन्ह व साहित्य भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के राष्ट्रीय संयोजक भीखमचन्द नखत ने किया।

शिक्षण संस्थाओं में जीवन विज्ञान आवश्यक : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 21 अक्टूबर, 2010।

जीवन विज्ञान जीवन की श्रेष्ठ कला है। शिक्षण संस्थानों में काम करने वाले शिक्षकों का दायित्व है कि वे विद्यार्थियों के जीवन निर्माण का प्रयास करें तो बच्चे श्रेष्ठ नागरिक बन सकते हैं। शिक्षा के साथ जीवन विज्ञान का कार्य व्यवस्थित चलाया जाये, विद्यार्थियों का स्वभाव और आदतों में परिवर्तन हो सकता है। माता-पिता अपनी संतानों को स्कूलों में भेजते हैं उनके मन की यह आकांक्षा रहती है कि मेरा बच्चा शिक्षित बने, आजीविका के लिए सक्षम बने और साथ में संस्कारवान बने, यह इच्छा उनकी पूरी होती है तो शिक्षण संस्थान सफल होता है अन्यथा मैनेजमेंट, शिक्षक अथवा शिक्षार्थी में कोई कमी है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने जीवन विज्ञान अकादमी संस्था सरदारशहर द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर में स्थानीय तेरापंथ भवन में व्यक्त किये।

जीवन विज्ञान का परिचय प्रस्तुत करते हुए प्रेक्षाप्राध्यापक जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने बताया जीवन विज्ञान जीने का व्यवस्थित ज्ञान है। जीवन विज्ञान जीने की वह कला है। जिससे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से अनुशासन स्मरण शक्ति, कार्यक्षमता और परीक्षा में रिजल्ट अच्छा होता है। शिक्षक बंधुओं को प्रेरित करने वाले एसडीएम लोकेश सहल, अभयशील सोनी, ए.वी.ई.ओ के प्रयासों से कार्यक्रम सफल हुआ। शिक्षकों की पूर्ण उपस्थिति इस बात का द्योतक है कि उनमें जीवन विज्ञान के प्रति आकर्षण है, वे प्रशिक्षण प्राप्त कर स्कूलों में विद्यार्थियों को प्रेरित करे। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुनि नीरजकुमार द्वारा प्रस्तुत जीवन विज्ञान गीत से हुआ।

जीवन विज्ञान अकादमी सरदारशहर के कार्याध्यक्ष उदयजी दुगड़ ने स्वागत किया। शिक्षा में जीवन विज्ञान की उपादेयता पर अभयशील सोनी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सज्जनराज सुराणा ने किया, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एम.एल. मित्री ने किया।

प्रशिक्षण के दूसरे चरण में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल के निर्देशन में हुआ। जीवन विज्ञान को कक्षा में किस तरह से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाये, लगभग 125 शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर लाभ उठाया और अनुभव किया ऐसे प्रशिक्षण सभी विद्यार्थियों के लिए होने चाहिए।